ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखन : एक अध्ययन

The Satire Writings of Gyan Chaturvedi: a Study

हिन्दी में
पी-एच.डी. उपाधि हेतु
महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर
को प्रस्तुत प्रस्तावित शोध कार्य की रूपरेखा
हिन्दी विभाग
(कला संकाय)
वर्ष-2016

शोध निर्देशक:
डॉ. राजेश कुमार शर्मा
सेवानिवृत्त वरिष्ठ व्याख्याता-हिन्दी विभाग
सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय
महाविद्यालय, अजमेर

शोधकर्ता
नेमीचंद तम्बोली

हिन्दी विभाग
सम्राट पृथ्वीराज चौहान महाविद्यालय, अजमेर
वर्ष 2016

परिशिष्ट–IV

प्रस्तुत शोध कार्य का प्रारूप

1.शोधार्थी का नाम (हिन्दी में)	:	नेमीचंद तम्बोली
In English	:	Nemi Chand Tamboli
2.शोध का शीर्षक (हिन्दी में)	:	ज्ञान चतुर्वेदी का व्यंग्य लेखनः एक अध्ययन
In English	:	***The Satire Writings of Gyan Chaturvedi: a Study***
3.शोध कार्य का स्थल	:	
(क) संस्था/विभाग जहां कार्य किया जा रहा है	:	सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर।
(ख) अनुसंधान की भौगोलिक स्थिति (यदि हो)	:	लागू नहीं
4.प्रस्तावित शोध कार्य का परिचय महत्ता एवं उद्देश्य	:	संलग्न–1
5.प्रस्तावित विषय पर पूर्व में किए गए कार्यों की समीक्षा	:	संलग्न–2
6.प्रस्तावित शोध क्षेत्र में शोध संबंधी रिक्तता	:	संलग्न–3
7.मुख्य प्राकल्पना (यदि हो)	:	संलग्न–4
8.शोध सामग्री और विधि शोध पद्धति	:	संलग्न–5
9.प्रस्तावित शोध विषय का अध्यायवत विवरण	:	संलग्न–6
10. संदर्भ ग्रंथ सूची	:	संलग्न–7

संक्षिप्त रूप रेखा का अनुमोदन

शोध निर्देशक के हस्ताक्षर
मय दिनांक

शोधार्थी के हस्ताक्षर
दिनांक सहित

4. प्रस्तावित शोध कार्य का परिचय, महत्ता एवं उद्देश्य संलग्न-1

प्रस्तावित शोध कार्य-***'ज्ञान चतुर्वेदी का व्यंग्य लेखन : एक अध्ययन'*** आधारित है। संस्कृत साहित्य की सुदीर्घ परंपरा में व्यंग्य लेखन अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम रहा है। व्यंग्य लेखन निश्चय ही लोक जीवन के तथ्यों से अवगत कराकर उसे भयभीत और सतर्क रखता है। ***वस्तुतः व्यंग्य रचना वह विधा है जिसमें तथ्यों को सीधा न कहकर उसे घूमा फिराकर कहा जाता है।*** व्यंग्य की अभिव्यक्ति अन्य विधाओं के माध्यम से होती रही है। अब तक साहित्य में व्यंग्य को हास्य से जोड़कर लिखा पढ़ा और समझा जाता रहा है, जबकि दोनों मिजाज से भिन्न है। हास्य की बनिस्पत व्यंग्य एक गंभीर कार्य है। हास्य लेखन में हंसी अनिवार्य होती है पर व्यंग्य के लिए यह आवश्यक नहीं है। सच्चा व्यंग्य जीवन की आलोचना है। यह युगीन सोच की दिशा निर्देश ही नहीं करता, अपितु आत्म साक्षात्कार के लिए भी मजबूर करता है। समसामयिक चेतना में हलचल पैदा करने के साथ ही व्यंग्य जीवन में व्याप्त मिथ्याचार, पाखंड, असमंजस्य और अन्याय से लड़ने की ऊर्जा भी प्रदान करता है।

व्यंग्य दो तरह से जीवन की विसंगतियों को उजागर करता है। वह या तो समाज में फैली अज्ञान, अंधविश्वास, भ्रष्टाचार आदि के चित्रण से व्यक्ति के प्रति करुणा, सहानुभूति उपजाता है या हीनता के कारण बदला लेने की भावना से आक्रामक रवैया अपनाता है। अलंकार वादियों ने व्याजोक्ति, समासोक्ति, व्यंग्योक्ति आदि भंगिमापूर्ण उक्तियों का महत्त्व स्वीकारा है। आचार्य कुंतक ने तो वक्रोक्ति को काव्य की आत्मा तक विवेचित किया है। सुमित्रानंदन पंत ने ताज कविता में मृत्यु के ऊपर अपार्थिव पूजन पर व्यंग्य किया है और जीते जागते मनुष्य की उपेक्षा किए जाने की पीड़ा को अभिव्यक्ति प्रदान की है:-

हाय मृत्यु का ऐसा अमर अपार्थिव पूजन,
जब विषण्ण, निर्जीव पड़ा हो जग जीवन।
शव को दे हम रंग रूप मानव का?
मानव को हम कुत्सित चित्र बना दे शव का।

पाश्चात्य विद्वान प्रो. सदरलैंड के अनुसार 'व्यंग्यकार का कार्य न्यायाधीश की भांति न्याय पालन कराने का है तथा शिष्ट समाज की मर्यादाओं की रक्षा करना है। उसका कार्य नर नारियों को नैतिक, बौद्धिक सामाजिक एवं अन्य कसौटियों पर खरे उतरने के लिए सचेत करने का है।' अतः व्यंग्य एक ऐसी साहित्यिक अभिव्यक्ति या रचना है, जिससे व्यक्ति तथा समाज की कमजोरियों, कथनी और करनी के अंतरों की समीक्षा के साथ भाषा को वक्र भंगिमा देकर प्रहार करते हुए की जाती है। व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार कराता है, जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों, मिथ्याचारों और पाखंडों का पर्दाफाश करता है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार 'व्यंग्य वह है, जहाँ कहने वाला अधरोष्ठ में हँस रहा हो और सुनने वाला तिलमिला उठा हो, फिर भी कहने वाले को जवाब देना अपने को और भी उपहासस्पद बना लेना हो जाता है।'

वर्तमान में हर क्षेत्र में विसंगतियां बढ़ी हैं। इस विसंगतियों पर प्रत्यक्ष प्रहार करना क्रोध की अभिव्यक्ति के अंतर्गत माना जाता है। इस क्रोध या व्यवस्था विरोध के प्रति अप्रत्यक्ष अभिव्यक्ति व्यंग्य के दायरे में आती है। वर्तमान की भाग दौड़ भरी जिन्दगी में आम व खास व्यक्ति के पास लम्बे लम्बे आदेश व उपदेश सुनने का वक्त नहीं है। ऐसा मेरी जानकारी में आता है तथा लागों का विचार है। व्यक्ति शीर्षक से पहले उपसंहार पढ़ने की जिज्ञासा प्रकट करता है। उपन्यास, कहानी की बनिस्पत चोटी की कला अर्थात् चुटकला सुनने में विश्वास प्रकट करता है। आज समाज का कोई वर्ग या क्षेत्र अछूता नहीं होगा, जहाँ पर विसंगतियों ने पांव नहीं पसार रखे हो। ऐसे माहौल में व्यंग्य कला या विद्या का तेज नश्तर बड़े से बड़े फोड़े से मवाद निकालकर राहत प्रदान करने के कार्य में समर्थ प्रतीत हो रहा है।

ज्ञान चतुर्वेदी विगत चार दशक से व्यंग्य लेखन में सक्रिय हैं। पेशे से चिकित्सक होने के कारण चतुर्वेदी ने समाज की विषम परिस्थिति को बड़ी ही निकटता से देखा है। आधि-व्याधि कभी वर्ग भेद नहीं करती है। यह हर किसी के पास बिना न्यौते के पहुँच जाती है। इन व्याधियों के निवारण की कला चिकित्सकों के पास बहुत खूब होती है। ज्ञान चतुर्वेदी हृदय रोग विशेषज्ञ हैं। आपने समाज की विषम व विद्रूप परिस्थितियों को देखा है। इन स्थितियों में आम मानव के मन में अनेक प्रश्न उठते होंगे। ऐसे अनेक प्रश्नों का समाधान ज्ञान चतुर्वेदी ने अपने लेखन के माध्यम से किया है। हृदय रोग विशेषज्ञ कितना धीर गंभीर रहकर अपने पेशे को पूर्णता की ओर ले जाता है, यह एक अनुतरित प्रश्न है। इस गंभीरता के साथ मानस में जो व्यंग्य लेखन का भाव प्रस्फुटित हुआ होगा, वह आंतरिक प्रेरणा थी या व्यवस्था विरोध के प्रति विरोध या व्यवस्थाओं के बीच पिसता अव्यवस्थित मानव मन। इन सभी सवालों के जवाब कहीं न कहीं ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखन में परिलक्षित होते हैं। इस प्रकार ऑपरेशन टेबल पर निर्दय मन समाज के सामने दयालुता का भाव रखकर किस तरह व्यंग्य लेखन की डगर पर डग भरने में कामयाब रहा है। संवेदना साहित्य की उपज है वही चिकित्सक का पेशा संवेदना को पास नहीं फटकने देता है। पुत्र माँ के ऑपरेशन के दौरान संवेदना व वात्सल्य का भाव मानस में लाए तो शायद उसके हाथ काँपने लगे। चिकित्सक के लिए अपनी मां को भी एक मरीज समझ कर ही अपने कार्य को अंजाम देना होता है तो दूसरे ओर एक पुत्र द्वारा माँ के प्रति बिना संवेदना प्रकट किए साहित्य लिखना दूभर प्रतीत होता है। इन दो किनारों को जोड़कर ज्ञान चतुर्वेदी ने संवेदना व संवेदनहीनता को साथ में गति दी है। इसमें लेखक की लेखनी कहां तक सार्थक रही है। इन्हीं जिज्ञासा भरे प्रश्नों के जवाब तलाशने की इच्छा स्वरूप मैंने 'ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखन का आलोचनात्मक विश्लेषण' विषय शोध का निर्णय किया है।

महत्ता:-

ज्ञान चतुर्वेदी का व्यंग्य लेखन विचारोत्तेजक हैं। व्यंग्य तात्कालिक परिणाम देने वाली सृजनशील कला है। समय स्थान व परिस्थिति के अनुकूल प्रत्युतर व्यंग्य को गति प्रदान करता है। व्यंग्य एक स्पिरिट है और यह सब विधाओं को ओढ़ लेता है। व्यंग्य किसी व्यक्ति पर तभी किया जा सकता है, जब वह किसी समाज के मान्य नैतिक मूल्य का मुखौटा लगाकर ठीक उसके विपरित काम कर रहा हो अथवा अपनी झूठी शान या प्रतिष्ठा का प्रदर्शन करके परिवेश को अपने प्रभाव में करना चाहता हो। मिथ्या गौर व प्रदर्शन (vanity) और दंभ (Hypoeraey)ही व्यंग्य के लक्ष्य होते हैं। व्यंग्य की श्रेष्ठता भी यही है कि व्यंग्य आक्रोश की छटपटाहट से शुरू हो तथा कारुण्य पूर्ण विवशता में समाप्त हो जाए।

ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखन ने ऐसे मुखौटे उतारने का काम बखूबी किया है। चतुर्वेदी ने अपने पहले उपन्यास 'नरक यात्रा' में चिकित्सा क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों पर कड़ा प्रहार किया है। चिकित्सा क्षेत्र में किस प्रकार व्यक्ति अपनी नौकरी बचाने के लिए चापलूसी व चाटुकारिता करता है तथा प्रशिक्षण काल में उसके साथ किए व्यवहार का वह बदला लेता है। चतुर्वेदी का दूसरा उपन्यास बारामासी है, इसमें एक छोटे से कस्बे के छोटे से आंगन में पल रहे छोटे-छोटे सपनों की कथा है। यह ऐसे सपने जो केवल देखे जाते हैं। पूरा होना इनके बस की बात नहीं है। उपन्यास में ग्रामीण जीवन, भाषा रहन सहन सहित परिवेश के साथ व्यक्ति विशेष की संवेदनशीलता व संवेदनहीनता पर मार्मिक रूप से व्यंग्य किया है। उपन्यास में मध्यम वर्गीय परिवार की न पूरी होने वाली इच्छाओं को व्यंग्य के सहारे अभिव्यक्ति प्रदान की गई है। नरक यात्रा व बारामासी उपन्यास के बाद प्रकाशित 'मरीचिका' उपन्यास हमें एक नए ज्ञान चतुर्वेदी से परिचित कराता है। चतुर्वेदी इस उपन्यास में व्यंग्य को एक सार्वभौमिक चिन्ता के रूप में तब्दील कर देते है। उपन्यास में निर्मल हास्य के साथ इस प्रकार व्यंग्य को प्रस्तुत किया गया है, जो एक साथ वितृष्णा तथा करुणा का भाव उत्पन्न करता है। उपन्यास में पौराणिक कथा के बहाने आधुनिक भारत की चिंताओं की ऐसी रोचक कथा बुन पाना ज्ञान चतुर्वेदी को हिन्दी के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण गद्यकार के रूप में रेखांकित करता है। हिन्दी व्यंग्य में पौराणिक फैंटेसी लिखी भी गई, परंतु वह फूहड़ तथा सतही निर्वाह में भटक गई। इस दृष्टि से 'मरीचिका' एक महत्त्वपूर्ण उपन्यास है।

इस प्रकार 'हम न मरब' उपन्यास बुंदेलखंड संस्कृति, भाषा, सभ्यता तथा मानापमान को अपने में समेटे हुए हैं। उपन्यास में प्रारंभ से लेकर अंत तक कथानक को इस तरह पिरोया है कि कहीं भी कथानक कमजोर नहीं हो पाया है। उपन्यास का शैल्पिक सौंदर्य अद्‌भुत तथा अनुपम है। उपन्यास में जीवन के सत्य को सुंदर ढंग से उभारा गया है, जिसमें आक्रोश है, करुणा है, संवेदना है, बुंदेलखंड की प्रभावी संस्कृति व सभ्यता है, अनायास प्रस्फुटित हास्य है। व्यंग्य की तीक्ष्ण मार है तथा हर पात्र की चारित्रिक विशेषता का उद्‌घाटन है। इसके साथ चतुर्वेदी के भूगोल को समझना, मैं और बकरी, मूर्खता में ही होशियारी, रामबाबू जी का बसंत व हिन्दी में मनहूश रहने की परंपरा लेखों में व्यंग्य का मार्मिक लेखन पढ़ने को मिलता है। व्यंग्य एक विद्रोह प्रवृत्ति है जो सहजता के साथ अपने कथन को प्रस्तु करती है। इन सब स्थितियों में ज्ञान चतुर्वेदी का लेखन कहां तक सटीक प्रतीत होता है। इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए ही ***'ई ज्ञान चतुर्वेदी का व्यंग्य लेखन: एक अध्ययन'*** को मैंने शोध का विषय रखा है।

मुख्य उद्देश्य:-

प्रस्तावित शोध ***'ज्ञान चतुर्वेदी का व्यंग्य लेखन : एक अध्ययन'*** के निम्नांकित उद्देश्य हैं:-

1. व्यंग्य का अर्थ स्वरूप व परिभाषा को स्पष्ट करते हुए विभिन्न विधाओं के माध्यम से इसकी अभिव्यक्ति को स्पष्ट करना।
2. हिन्दी काव्य लेखन में ज्ञान चतुर्वेदी के पूर्ववर्ती व्यंग्य लेखकों के लेखन का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करना।
3. ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखन के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में उजागर की गई विसंगतियों को समालोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करना।
4. व्यंग्य लेखन के माध्यम से विभिन्न व्यवस्थाओं में आंशिक व सम्पूर्ण सुधार को उजागर करना है।
5. ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखन का विशद् विवेचना तथा इसके प्रति उनके महत्त्वपूर्ण दृष्टिकोण को उजागार करना।
6. ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखन में कार्य कारण में संबंधों की स्थापना पर दृष्टिपात करना।
7. समकालिक व्यंग्य लेखन से सामाजिक चेतना का स्तर ज्ञात करना।
8. हिन्दी व्यंग्य लेखन में ज्ञान चतुर्वेदी के अवदान को स्पष्ट करना।
9. ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखन में रचनात्मक वैशिष्टय के स्तर की जानकारी प्राप्त करना।
10. वर्तमान संदर्भ में ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखन की सार्थकता का पता लगाना।
11. व्यंग्य की वर्तमान दशा व दिशा पर लेखक के मन्तव्य को जानना।
12. ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखन में हर वर्ग को प्रतिनिधित्व मिला है। अत: हर वर्ग के प्रति लेखन की अवधारणा को स्पष्ट करना मेरे शोध का उद्देश्य है।
13. मेरा शोध कार्य अन्य शोधार्थियों के उपयोगी बन सकेगा। ऐसा मेरा विश्वास है। मैं इस कसौटी पर खरा उतरने का भरपूर प्रयत्न करुँगा।

5. प्रस्तावित शोध पर पूर्व में किए कार्यों की समीक्षा संलग्न-2

'ज्ञान चतुर्वेदी का व्यंग्य लेखनः एक अध्ययन' मेरे शोध का विषय है। व्यंग्य लेखन में पूर्व में ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखन पर लगभग अभी तक कोई विशेष कार्य नहीं हुआ है। ज्ञान चतुर्वेदी का व्यंग्य लेखन हरि शंकर परसाई और शरद जोशी की परंपराओं को आगे बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करता है। चतुर्वेदी का व्यंग्य लेखन समाज के विभिन्न वर्गों की विसंगतियों को उजागर करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। व्यंग्य लेखन की परंपरा दीर्घकालीन रही है। हिन्दी साहित्य में आदिकाल से पूर्व भी इस परंपरा का निर्वाह होता रहा है। व्यंग्य के क्षेत्र में पूर्व में हिन्दी गद्य लेखन में व्यंग्य लेखन और विचार, मैथिलीशरण गुप्त के हिन्दी व्यंग्य लेखन का मूल्यांकन, आधुनिक हिन्दी कविता में व्यंग्य और विडंबना, भारतेंदु साहित्य में हास्य और व्यंग्य, काव्य रचना में व्यंग्य की भूमिका तथा समसामयिक व्यंग्य लेखन में सामाजिक चेतना विषय आधारित शोध कार्य भी हुए है। शरद जोशी, रवीन्द्र नाथ त्यागी, हरि शंकर परसाई, मुक्तिबोध, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, नागार्जुन आदि के व्यंग्य लेखन पर भी शोध कार्य सामने आता है। सत्तर के दशक के बाद व्यंग्य लेखन की गति मंथर से हो गई थी। इस दौर में प्रेम जनमेजय, अशोक चक्रधर, मनोहर श्याम जोशी, जवाहर चौधरी, नरेन्द्र कोहली, लतीफ घोंघी, अजय अनुरागी, अनुराग वाजपेयी, मृदुला गर्ग, पूरण शर्मा, गोपाल चतुर्वेदी, पुलकेन्द्र अरोड़ा, सुरेश माहेश्वरी, सुशील सिद्धार्थ, रास बिहारी गौड, शंकर पूर्ण तांबेकर, सम्पत सरल, माणिक वर्मा, सुरेश उपाध्याय, नीरज पुरी, तेज नाराण बेचैन, मंजीत सिंह आदि के लेखन के साथ ही ज्ञान चतुर्वेदी का भी एक सशक्त लेखक के रूप में उभर का सामने आया है। वर्तमान में पूरा तंत्र पूंजी के पैरों पर खड़ा हुआ है। जिससे मानवीय संवेदना तिरोहित होती जा रही है । ऐसी स्थिति में हिन्दी व्यंग्य लेखन वर्तमान समय की महत्त्वपूर्ण मांग है।

व्यंग्य लम्बे उपदेशों में नहीं लघु कथाओं में सार को समेटने वाला होता है। ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखन में ऐसे अनेक मुकाम आते हैं जो समाज को सही मार्ग पर प्रशस्त करने के लिए आम व्यक्ति को तैयार करते हैं। चतुर्वेदी के व्यंग्य का दायरा, संवेदना शिल्प, समकालिकतत्व, भाषा व प्रशासन की अव्यवस्थाओं की पड़ताल करने की दृष्टि से मैं ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखन पर शोध कार्य करने हेतु सहमति चाहता हूँ।

6. प्रस्तावित शोध कार्य में शोध संबंधी रिक्तता संलग्न-3

'ज्ञान चतुर्वेदी का व्यंग्य लेखनः एक अध्ययन' मेरे शोध विषय है' जहाँ तक मेरे जानकारी में है, उक्त विषय पर शोध कार्य लगभग नहीं हुआ है। मेरी दृष्टि में यह विषय अछूता व नवीन है। आदिकाल से पूर्व भी साहित्य के साथ व्यंग्य लेखन का जुड़ाव रहा है। हिन्दी की अनेक विधाओं में व्यंग्य के दर्शन होते हैं। साहित्य की अन्य विधाओं में एक निश्चित दायरे में लेखन कार्य होता है। जो दीर्घकालिक शिक्षा प्रदान करते हैं। व्यंग्य लेखन तात्कालिक परिस्थितियों पर तात्कालिक परिणाम देने की एक शैली है।

वर्तमान की भागदौड़ भरी जिन्दगी में आम आदमी के चेहरे की हँसी लुप्त प्रायः हो गई है। कहीं अवसर पाकर हास्य का अवसर पर भी मिलता है तो उसमें अधिक फूहड़पन दिखाई देता है। व्यंग्य उस सुई के समान है जो शरीर के किसी भाग में लगने पर क्षणिक दर्द का अहसास तो करवाती है, लेकिन शरीर में उसके माध्यम से प्रविष्ट की गई दवा अपना असर तत्काल दिखाना शुरू कर देती है। व्यवस्था विरोध के प्रति प्रतिशोध का भाव आम व्यक्ति से लेकर मूर्धन्य साहित्यकार व लेखक में भी देखने को मिलता है। लेकिन इस प्रतिशोध को वह प्रत्यक्ष रूप में प्रकट नहीं कर पाता है। ऐसी विषम परिस्थितियों में व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति उसे उचित मार्ग प्रदान करती है।

हिन्दी की लघु कथाएँ जो एक छोटे से कथन के माध्यम से बड़े से बड़ा भाव प्रकट कर देती है, यह ताकत सिर्फ व्यंग्य कला में ही है। इसका एक उदाहरण द्रष्टव्य है-'एक युवा दम्पत्ति जब अपने माता-पिता को वृद्धाश्रम में छोड़ने जाते वक्त आपस में चर्चा करते हैं कि-अगर हम समय रहते इनकों वृद्धाश्रम में छोड़ आते तो शायद हमें काफी समय पहले से आराम से जीवन बरस करने का अवसर मिल जाता।' इस चर्चा पर युवा दम्पत्ति का अबोध बालक कहता है-'पिता जी, मैं आपको वृद्धाश्रम में छोड़ने में कोई देरी नहीं करुँगा' यह व्यवस्था परिवर्तन व मानव हृदय परिवर्तन के लिए एक करारा जवाब है, जो व्यंग्य की ताकत है। ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखन में वर्तमान व्यवस्था विरोध, लालफीताशाही, शिक्षा प्रणाली में उभरती विसंगतियाँ, टूटते परिवार, एकाकी परिवार, ग्रामीण जीवन की विडम्बना सहित अनेक मुद्दों पर करारा व्यंग्य किया गया है। नावक के डंक की भांति व्यंग्य लेखन वर्तमान में साहित्य में कारगार साबित हो रहा है। इन सभी स्थितियों में ज्ञान चतुर्वेदी का व्यंग्य लेखन हिन्दी साहित्य व आम मानव के लिए कितना योगदान प्रदान कर रहा है। इन सभी स्थितियों के विश्लेषण व पड़ताल के लिए मैंने ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखन का आलोचनात्मक विश्लेषण को मेरे शोध का विषय बनाया है। मुझे विश्वास है कि यह विश्लेषण वर्तमान व भावी लेखकों तथा शोधार्थियों की लेखनी को नई दिशा की ओर अग्रसर करने में सहायक होगा। व्यंग्य लेखन के क्षेत्र में आ रही मंथर गति को फिर से तीव्र गति की ओर अग्रसर करने में भी मेरा शोध नवीन आयाम स्थापित कर सकेगा। ऐसा मेरा विश्वास है।

7. मुख्य प्राक्कल्पना

संलग्न-4

'***ज्ञान चतुर्वेदी का व्यंग्य लेखनः एक अध्ययन*** मेरे शोध विषय है' प्रस्तुत शोध में व्यंग्य, आलोचना व विश्लेषण शब्द को मुख्य आधार रूप में प्रस्तुत किया गया है। व्यंग्य के लिए व्याजोक्ति, अन्योक्ति, छींटाकशी आदि शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है। इसमें मूल रूप से व्यंग्य को परिभाषित करना, आलोचना व विश्लेषण दोनों शब्दों की शाब्दिक व अर्थगत व्याख्या प्रस्तुत करना इसके अंतर्गत आएगा। संगतिपूर्ण जीवन में जिस प्रकार श्रृंगार का स्थान है, ठीक उसी प्रकार असंगतिपूर्ण जीवन में व्यंग्य का दर्जा है। भौतिकता की प्यास ने वर्तमान में मनुष्य की संवेदना व सामाजिक चेतना को नष्ट प्रायः कर दिया है।

मेरा शोध कार्य मूल रूप से लेखन, पठन पर आधारित है। फिर भी वर्तमान में मुख्य रूप से मानव जीवन से संवेदना व सामाजिक चेतना लुप्त होने के पीछे क्या परिस्थितियां काम कर रही है? व्यंग्य लेखन के सहारे इन परिस्थितियों का निराकरण किस प्रकार संभव है? वर्तमान में दिखावटी, बनावटी या कृत्रिम हंसी के नीचे दबी अर्द्धचेतन अवस्था को किस प्रकार चेतन अवस्था की ओर व्यंग्य के माध्यम से अग्रसर किया जा सकता है। शोध के माध्यम से इन जिज्ञासाओं (परिकल्पनाओं) को संतुष्टि करने का एक प्रयास रहेगा।

8. शोध विधि/पद्धति

संलग्न-5

प्रस्तावित अध्ययन के उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए प्रथम अध्याय में निगमन पद्धति अपनाते हुए व्यंग्य की अवधारणा व उसके स्वरूप को परिभाषित कर व्याख्यायित किया जाएगा। द्वितीय अध्याय व्यक्तित्व व कृतित्व पर आधारित होने से इस अध्याय के लिए साक्षात्कार प्रणाली, व्यक्ति इतिहास अध्ययन पद्धति, पांडुलिपियां, शोध प्रतिवेदन, समिति व आयोग की रिपोर्ट के आधार पर शोध सामग्री का संकल्न किया जाएगा। तृतीय अध्याय व्यंग्य लेखकों के लेखन में संवेदना व शिल्प की जानकारी प्राप्त करने के लिए व्यंग्य लेखन की पुस्तकों के अध्ययन को शामिल किया जाएगा। इसमें अवलोकन विधि का उपयोग किया जाएगा। चतुर्थ अध्याय ज्ञान चतुर्वेदी के लेखन में सामाजिक सरोकार से संबंधित होने के कारण इसमें पात्रों की दृष्टि से सामाजिक सरोकार, पारिवेशिक यथार्थ व मूल्य विघटना की स्थितियाँ का पुस्तकों के आधार पर अध्ययन किया जाएगा। पंचम अध्याय में ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखन में मौलिक उद्‌भावनाओं को जानने का प्रयास किया गया है। अतः इसमें साक्षात्कार व व्यक्ति इतिहास प्रणाली का प्रयोग किया जाएगा। विश्लेषण के लिए विभिन्न मनीषियों के विचारों की तर्क सम्मत व्याख्या प्रस्तुत की जाएगी। इसके अतिरिक्त भी विभिन्न शोध पद्धतियों के आधार पर शोध कार्य पूर्ण करने का प्रयास किया जाएगा।

9. प्रस्तावित शोध विषय का अध्यायवत् विवरण संलग्न-6

विषयानुक्रमाणिका

विषयः-*'ज्ञान चतुर्वेदी का व्यंग्य लेखनः एक अध्ययन'*

अध्ययन तथा विश्लेषण की सुविधा के लिए प्रस्तावित शोध कार्य को सात अध्यायों में विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्याय - व्यंग्यः अर्थ, स्वरूप, परिभाषा एवं अवधारणा

(अ) व्यंग्य का अर्थ, स्वरूप व परिभाषा।

(आ) हिन्दी साहित्य में व्यंग्य का उद्‌भव और विकास।

(इ) व्यंग्य विकास के विभिन्न आयाम।

(ई) वर्तमान लेखन में व्यंग्य की भूमिका एवं चुनौतियाँ।

(उ) साहित्य की विभिन्न विधाओं में व्यंग्य लेखन।

(ऊ) युग प्रवेश और समाकलन ज्ञान चतुर्वेदी की व्यंग्य लेखन यात्रा।

समाकलन

द्वितीय अध्याय - ज्ञान चतुर्वेदी : व्यष्टि और सृष्टि

(अ) व्यष्टि दर्शन -

(i) आरंभिक जीवन एवं पारिवारिक परिवेश।

(ii) व्यक्तित्व

(iii) शिक्षा व व्यवसाय।

(iv) सामाजिक परिवेश।

(v) सृजनात्मकता।

(vi) पुरस्कार व सम्मान।

(आ) सृष्टि दर्शन -

उपन्याय, कहानी, आलेख, पत्र-पत्रिकाओं में नियमित आलेख, सामायिक व छिटपुट लेखन।

समाकलन

तृतीय अध्याय - ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखन में संवेदना

(i) संवदेनाः अर्थ, स्वरूप एवं परिभाषा।

(ii) व्यंग्य लेखन और सामाजिकता।

(iii) समाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं धार्मिक क्षेत्र में संवेदना।

(iv) मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता।

समाकलन

चतुर्थ अध्याय – ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखन में सामाजिक सरोकार

(i) पात्रों की दृष्टि से।

(ii) पारिवेशिक यथार्थ की दृष्टि से।

(iii) मूल्य विघटन की स्थितियाँ की दृष्टि से।

(iv) सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संदर्भ में।

समाकलन

पंचम अध्याय – ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखन में मौलिक उद्‌भावना

(i) नवीन सृजन व शब्दावली।

(ii) पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग।

(iii) परिवेश अनुकूल पात्रों का सृजन

(iv) बिम्ब विधान व बिम्बात्मक भाषा का प्रयोग।

समाकलन

षष्ठम अध्याय- ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखन में शिल्प विधान

(i) शिल्प व कथ्यय का गहरा सामंजस्य।

(ii) भाषिक संरचना।

(iii) संवाद शैली।

(iv) कहावत, मुहावरे, लोकोक्ति आदि का प्रयोग।

(v) भाषा का वैविध्य।

समाकलन

सप्तम अध्याय- उपसंहार

(i) शोध निष्कर्षों का सार–समाहार

परिशिष्ट –ज्ञान चतुर्वेदी का साक्षात्कार।

10. संदर्भ ग्रंथ सूची

संलग्न-7

मूल एवं आधारभूत ग्रंथ

(क) ज्ञान चतुर्वेदी के उपन्यास

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	प्रकाशन	प्रकाशन वर्ष
1.	नरक यात्रा	राजकमल प्रकाशन	2010
2.	बारामासी	राजकमल प्रकाशन	2009
3.	मरीचिका	राजकमल प्रकाशन	2007
4.	हम न मरब	राजकमल प्रकाशन	2014

अन्य लेखन

क्र.सं.	व्यंग्य लेखन संग्रह	प्रकाशन	प्रकाशन वर्ष
1.	प्रत्यंचा	भारतीय ज्ञानपीठ	2010
2.	प्रेत कथा	– –	1985
3.	खामोश नंगे हमाम में	– –	2004
4.	अलग	– –	2010
5.	दंगे में मुर्गा	– –	1998
6.	ज्ञान है तो जहान है		
7.	एक स्त्री विमर्श	नया ज्ञानोदय	मई 2005
8.	पलको पर टंगा आंसू	नया ज्ञानोदय	मई 2006
9.	लगभग 25 प्रसिद्ध	– –	– –
	कहानियों का पुनर्पाठ लेखन	– –	– –
10.	मेरी इक्यावन व्यंग्य रचनाएं	– –	– –
11.	जो घर फूंके	ज्ञानपीठ प्रकाशन	– –
12.	बिसात बिछी है	– –	– –

पत्र पत्रिकाओं में स्तंभ

1.	ज्ञानोदय	बाराखंडी	
2.	लोकमत		
3.	राजस्थान प्रत्रिका		
4.	इंडिया टूडे		
5.	जनसत्ता		

सहायक सामग्री
आलोचनात्मक ग्रंथ

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	लेखक	प्रकाशक	प्रका.वर्ष
1.	समकालीन हिन्दी व्यंग्य-एक परिदृश्य	सुदर्शन मजीठिया	शांति प्रकाशन रोहतक	1992
2.	स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी व्यंग्य का मूल्यांकन	सुरेश माहेश्वरी	विकास प्रकाशन कानपुर	1994
3.	हिन्दी हास्य व्यंग्य संकलन	श्रीलाल शुक्ल	नेशनल बुक प्रकाशन	1997
4.	लोकतंत्र के नाम	रास बिहारी गौड	साहित्यगार, जयपुर	1997
5.	नेता जी कहिन	मनोहर श्याम जोशी	राजकमल प्रकाशन	2003
6.	समग्र व्यंग्य-पांच खंड	नरेन्द्र कोहली	वाणी प्रकाशन रोहतक	2005
7.	रहा किनारे बैठ	शरद जोशी	नेशनल पब्लिशिंग	2006
8.	उस देश का यारों क्या कहना	मनोहर श्याम जोशी	किताब घर प्रकाशन	2007
9.	अध्यात्म का मार्केट	शिव शर्मा	भारतीय पुस्तक परिषद	2008
10.	फंडा मैनेजमेंट का	प्रेमपाल शर्मा	सामयिक प्रकाशन	2008
11.	यूं ही	अशोक चक्रधर	पेंगइन बुक्स	2008
12.	बात ये है कि	शरद जोशी	राजपाल एंड संस	2008
13.	यथा समय	शरद जोशी	भारतीय ज्ञानपीठ	2008
14.	एक गधा नेफा में	कृष्ण चन्दर	हिन्द पाकेट	2008
15.	धांधलेश्वर	गोपाल चतुर्वेदी	भारतीय ज्ञानपीठ	2008
16.	आदमी और गिद्ध	गोपाल चतुर्वेदी	ज्ञानगंगा प्रकाशन	2008
17.	दबाव की राजनीति	अजय अनुरागी	नेशनल पब्लिशिंग	2009
18.	बेटा वीआईपी बन	आर.के.पालीवा	कल्याणी शिक्षा परिषद	2009
19.	प्रपंचतंत्र	संतोष खरे	मेधा बुक्स	2009
20.	व्यंग्य पुराणम	श्याम सुंदर गौस	डायमंड पाकेट बुक्स	2010
21.	फ्री हिट	मृदुल कश्यप	सामयिक प्रकाशन	2010
22.	सरकार का घड़ा	यज्ञ शर्मा	प्रभात प्रकाशन	2010
23.	ममता	बी.पी.वाजपेयी	साहित्यिका इंडियन	2010
24.	हिन्दी गद्य लेखन में व्यंग्य विचार	सुरेश कांत	राधाकृष्ण प्रकाशन	2004
25.	भारत एक बाजार है	विष्णु नागर	राजकमल प्रकाशन	2011
26.	हीरक जयंती	नागार्जुन	आत्माराम प्रकाशन	2010
27.	बालम तू काहे न हुआ एनआरआई	आलोक पुराणिक	राधाकृष्ण प्रकाशन	2010
28.	कर लेंगे सब हजम	मृदुला गर्ग	सामयिक प्रकाशन	2015
29.	सियासी कैटवॉक	श्यामा हमराई	कमलगोयना प्रकाशन	
30.	व्यंग्यालोचना के पार द्वार	बालेन्दु शिखर तिवारी	बी.के.तेजना	

31.	अत्याधुनिक हिन्दी साहित्य	डॉ. कुमार विमल	पराग प्रकाशन	1965
32.	नई कहानी:संदर्भ और प्रकृति	डॉ. देवीशंकर अवस्थी	अकक्षर प्रकाशन	1966
33.	हिन्दी उपन्यास:पहचान और परख	डॉ.इन्द्रनाथ मदान	राजकमल प्रकाशन	1968
34.	हिन्दी उपन्यास साहित्य का सां.अध्ययन	डॉ. रमेश तिवारी	रचना प्रकाशन	1972
35.	हिन्दी कहानी में जीवन मूल्य	रमेश चंद लवानिया	अनिल प्रकाशन	1973
36.	साहित्य के नए संदर्भ	डॉ. रामगोपाल शर्मा	नेशनल पब्लिसिंग	1976
37.	अजगर करे न चाकरी	सूर्य बाला	प्रभात प्रकाशन	1989
38.	हिन्दी उपन्यास:सामाजिक चेतना	डॉ. रजनीकांत एस.शाह	राजकमल प्रकाशन	1990
39.	परसाई रचनावली 6 भाग	हरिशंकर परसाई	राजकमल प्रकाशन	1997
40.	हिन्दी व्यंग्य एवं व्यंग्यकार	बापू राव देसाई	विनय प्रकाशन	1997
41.	हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास	सुमन राजे	भारतीय ज्ञानपीठ	2003
42.	हिन्दी गद्य प्रकृति और रचना	डॉ. रामचन्द्र तिवारी	विवि. ज्ञानपीठ	2005
43.	परिधि पर स्त्री	मृणाल पांडे	राधाकृष्ण प्रकाशन	2006
44.	श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य कहानियां	काका हाथरसी	गिरीराज शरण प्रकाशन	2006
45.	हास्य व्यंग्य रंग एकांकी	रामगोपाल वर्मा	आत्माराम एंड संस	2006
46.	चमार की बेटी	डॉ. धर्मवीर भारती	वाणी प्रकाशन	2007
47.	मन मस्त हुआ	अल्हड़ बीकानेरी	डायमंड पॉकेट	2011
48.	मेरे प्रिय व्यंग्य लेख	विवेक रंजन	--	2016
49.	अंधेरे का मध्य बिन्दु	वंदना गुप्ता	एसपीएन प्रकाशन	
50.	साठोतरी व्यंग्य और श्रीलाल मुक्त	डॉ. रमेश तिवारी	हिन्दी साहित्य	
51.	मूर्खता की महापोथी	रामविलास जांगिड़	विवेक प्रकाशन	
52.	आइए गांधी गिरी करें	रामविलास जांगिड़	हंसा प्रकाशन	
53.	भ्रष्टाचार प्रबंधन	रामविलास जांगिड़	रचना प्रकाशन	
54.	आधुनिक हिन्दी हास्य व्यंग्य	केशन चंद शर्मा	भारतीय ज्ञानपीठ	
55.	प्रेम के साथ पिटाई	लवलीन्	समायिक प्रकाशन	
56.	हिन्दी साहित्य का इतिहास	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	--	
57.	राग दरबारी (उपन्यास)	श्री लाला शुक्ल	--	
58.	कुरु कुरु स्वाह	मनोहर श्याम जोशी	--	

59.	हिन्दी साहित्य की भूमिका	हजारी प्रसाद द्विवेदी	राजकमल प्रकाशन	1994
60.	हिन्दी साहित्य और संवदेन का विकास	रामस्वरूप चतुर्वेदी	--	--
61.	हिन्दी उपन्यास साहित्य में आदर्शवाद	सर्वजीत राजा	लोकभारती प्रकाशन	1992
62.	हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास	गणपति चंद गुप्त	लोकभारती प्रकाशन	1997
63.	मानसरोवर आठ भाग	प्रेमचंद	--	--
64.	आधुनिकता के संदर्भ में हिन्दी कहानी	डॉ. नरेन्द्र मोहन	जयश्री प्रकाशन	1983
65.	हिन्दी उपन्यासः उपलब्धियां	डॉ. लक्ष्मीसागर	राधाकृष्णन	1976
66.	हिन्दी साहित्य का इतिहास	डॉ. नगेन्द्र	--	--
67.	मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं	डॉ. राधे मोहन शमा	--	--
68.	हिन्दी उपन्यासः उद्भव और विकास	डॉ. सुरेश सिन्हा	अशोक प्रकाशन	1966
69.	हिन्दी उपन्यासःसामाजिक चेतना	डॉ. कुंवर पाल	पांडुलिपि प्रकाशन	1976
70.	हिन्दी साहित्य का इतिहास	विजेन्द्र स्नातक	साहित्य अकादमी	1994
71.	चिंतामणि तीन भाग	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	--	--
72.	जगदम्बा बाबू गांव आ रहे	चित्रा मुद्गल	अनन्य प्रकाशन	1980

सहायक पत्र पत्रिकाएं

क्र.सं.	सहायक पत्र-पत्रिका	सम्पादक	प्रकाशन स्थान	प्रकाशन वर्ष
1.	व्यंग्य यात्रा	प्रेम जनमेजय	दिल्ली	2000
2.	वैचारिकी	बाबूलाल शर्मा	कोलकाता	1972
3.	वागर्थ	कुसुम लेमानी	कोलकाता	1975
4.	अभिनव इमरोज	देवेन्द्र बहल	नई दिल्ली	
5.	बाल वाटिका	भैरुलाल गर्ग	भीलवाड़ा	1997
6.	अक्षरा	कैलाश चंद पंत	भोपाल	1988
7.	नया ज्ञानोदय	रविन्द्र	नई दिल्ली	1999
8.	अक्सर	नंद चतुर्वेदी	जयपुर	
9.	आलोचना	नामवर सिंह	नई दिल्ली	2004
10.	हंस	राजेन्द्र यादव	नई दिल्ली	2008
11.	कथादेश	हरिनारायण	दिल्ली	2008
12.	मधुमति	अजीत गुप्ता	उदयपुर	1958
13.	आजकल	योगेन्द्र दत्त शर्मा	नई दिल्ली	2008
14.	भाषा	जगदीश चतुर्वेदी	दिल्ली	1982
15.	समय माजरा	हेतु भारद्वाज	जयपुर	2006
16.	साहित अमृत	त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी	दिल्ली	2008
17.	दैनिक नवज्योति	--	--	--
18.	राजस्थान पत्रिका	--	--	--
19.	दैनिक भास्कर	--	--	--
20.	दैनिक पंजाब केसरी	--	--	--
21.	दैनिक जनसत्ता	--	--	--
22.	दैनिक अमर उजाला	--	--	--

शब्द कोश

क्र.सं.	शब्द कोश	सम्पादक	प्रकाशक	प्र.स.
1.	हिन्दी साहित्य कोश भाग-1	धीरेन्द्र वर्मा	ज्ञानमंडल प्रकाशन	सं 2020
2.	हिन्दी साहित्य कोश भाग-2	धीरेन्द्र वर्मा	ज्ञान मंडल प्रकाशन	सं 2020
3.	नालंदा हिन्दी शब्द कोश	--	नालंदा प्रकाशन	--
4.	समान्तर कोश	अरविंद कुमार	नेशनल बुक ट्रस्ट दिल्ली	
5.	हिन्दी शब्द कोश	डॉ.हरदेव बाहरी	--	1990
6.	संस्कृत हिन्दी कोश	शिवराज वामन आप्टे	---	1969
7.	मानविकी परिभाषिक कोश	डॉ. नगेन्द्र	---	1965

प्रस्तावित शोध रूपरेखा अनुमोदित **शोधार्थी के हस्ताक्षर**

शोध निदेशक के हस्ताक्षर मय सील **दिनांक:.............**

शोध कार्य की सम्भावित अवधि

1. प्रस्तावित शोध कार्य हेतु प्रथम वर्ष में संबंधित शोध संदर्भ सूचीकरण, सर्वेक्षण एवं एतद् संबंधित पुस्तकों व शोध पत्रों का संकलन, अवलोकन किया जाना प्रस्तावित है।

2. दूसरे वर्ष में शोध सामग्री का अध्ययन करते हुए बिन्दूवार लेखन किया जाना प्रस्तावित है। शोध छात्र अध्ययन के बीच ही यह अनुभव कर सकेगा कि शोध कार्य के लिए और कितने समय की आवश्यकता होगी।

3. तृतीय वर्ष में लेखन कार्य पूर्ण कर समापन का कार्य किया जा सकेगा, इस तरह कुल तीन वर्षों में शोध कार्य पूर्ण किया जा सकेगा।

संभवतः

उपर्युक्त शोध कार्य की अवधि प्रस्तावित है।